प्रातः क्लास 24-2-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चे अभी शिव जयन्ति मना रहे हैं और भारत में ही शिव जयन्ति मनाते हैं। जयन्ति एक ही की मनाई जाती है। उसको अगर सर्वव्यापी कह दें हैं, अब सर्व की जयन्ति तो हो न सके। जयन्ति एक की ही मनाई जाती है। जयन्ति कब मनाई जाती है जब गर्भ से बाहर आते हैं। जयन्ति मनाते तो जरूर हैं। आर्यसमाजी भी मनाते हैं। अभी तुम मनाते हो32वीं जयन्ति। गोया 32वां वर्ष हुआ जयन्ति को। जन्म दिन तो सभी को याद रहता है। फलाने दिन यह गर्भ से बाहर निकला। अभी उनकी तुम 32वीं जयन्ति मनाते हो। वह तो है निराकार। उनकी कैसे जयन्ति हो सकती है। वह तो आत्मा जाकर शरीर में प्रवेश करती है, तब ही जयन्ति मनाई जाती है। इतने बड़े2 मनुष्यों के निमंत्रण कार्ड आद जाते हैं कोई को पूछना तो चाहिए ना जयन्ति कैसे मनाते हैं। उस ने जन्म कब, कैसे लिया? फिर उनके शरीर का नाम क्या रखा। इतने पत्थर बुधि हैं जो कब पूछते भी नहीं हैं। समझने के लिए पूछना तो चाहिए ना। उनको कहा जाता पत्थर बुधि। शिव जयन्ति मनाते हैं परन्तु उन से कोई पूछते नहीं। वह तो है निराकार। उनका नाम ही है शिव। तुम सालीग्राम बच्चे हो। जानते हो इस शरीर में शालीग्राम है। नाम तो शरीर का ही पड़ता है। वह तो है परमात्मा शिव। अभी तुम कितना धूम-धाम से प्रोग्राम रखते हो। दिन प्रति दिन तुम धूम-धाम से समझाते रहते हो। शिव बाबा की ऐसे प्रवेशता होती है। वह जयन्ति ही गाई जाती है। उनकी तिथ-तारीख कोई होती नहीं। मैं कहते हैं मैं साधारण तन में प्रवेश करता हूँ, मैं कब, किस घड़ी, वह नहीं बताते हैं। तिथ-तारीख दिन आद नहीं बताते हैं जो कहें कि फलाना तारीख जैसे बरसी मनाते हैं, बस। तिथ-तारीख होती नहीं जन्मपत्री आद होती नहीं। नहीं तो जन्म-पत्री इनकी सब से ऊंच ऊंच है। कहते भी हैं हे प्रभु तेरी महिमा अपरम-अपार है। तो जरूर कुछ करते होंगे ना। महिमा बहुतों की गाई जाती है। नेहरू, गांधी की भी महिमा गाते हैं। उनकी महिमा कोई भी बता न सके। ... वह तो एक ठहरा ना। उनको सर्वव्यापी कैसे कह सके। पत्थर बुधि इतने बन गये हैं जो समझते ही नहीं। और तुम मनाते हो तो कोई को पूछने का भी साहस नहीं रखते हैं। नहीं तो पूछना चाहिए ना। शिवजयन्ति गाई जाती है, महिमा की जाती है जरूर हो कर गये हैं। बहुत भक्तलोग हैं। गवर्नमेन्ट भी भक्तों के स्टेम्पस बनाती है। अगर धर्म को न मानते तो साधुओं, भक्तों आद के स्टेम्पस क्यों नहीं बनाते। जैसी है गवर्नमेन्ट वैसी है रईयत। अभी तुम बच्चों को बाप के बायोग्राफी अच्छी तरह से मालूम है। तुमको जितना खबर रहता है उतना और कोई को नहीं रहता। तुम ही कहते हो शिव जयन्ति हीरे तुल्य जयन्ति है। बाकी सभी जयन्तियां कौड़ी मिशल हैं। समझो कृष्ण जयन्ति मनाते हैं इस समय उनको तो तुम कौड़ी तुल्य समझते हो। बाप ही आकर कौड़ी तुल्य से हीरे तुल्य बनाते हैं। श्रीकृष्ण बाप द्वारा इतना ऊंच बना। इसलिए उनका जन्म हीरे तुल्य गाया जाता है। पहले जरूर कौड़ी तुल्य होंगा फिर बाप ने हीरे तुल्य बनाया। यह सब बातें मनुष्य नहीं जानते हैं। उनको ऐसा वर्ल्ड प्रिन्स किसने बनाया। तो यह ... ना चाहिए ना। कृष्णजन्माष्टमी मनाते हैं, बच्चा तो माता के गर्भ से ही निकला। फिर दिखाते हैं ... कहीं में ले जाते हैं। अब कृष्ण तो वर्ल्ड का प्रिन्स, उनको फिर डर काहे का। वहां कंस आद कहां से आया। यह सब बातें शास्त्रों में लिख दी हैं। अभी तुमको अच्छी रीत समझाना चाहिए। समझाने की युक्तियां बड़ी अच्छी चाहिए। सभी एक जैसे नहीं पढ़ा सकते हैं। युक्ति से समझाने से और ही डिसकवरिंग हो जाती है। अभी शिवजयन्ति मनाई जाती है तो जरूर वही वर्णन करना। गांधी जयन्ति पर गांधी की ही महिमा करेंगे। और सुनेंगा नहीं। अभी शिव जयन्ति मनाते हैं उसकी महिमा क्या है? उनकी भी बायोग्राफी जीवन चरित्र होगा ना। तुम उस दिन उनका ही जीवन चरित्र बैठ सुनाओ। जैसे कि बाप समझाते हैं। मनुष्य कोई पूछते भी नहीं हैं। शिवजयन्ति कैसे शुरू हुई। इसका कुछ भी वर्णन नहीं है। महिमा तो अपरम-अपार गाई जाती है। शिव बाबा को भोलानाथ कह बहुत महिमा करते हैं। वह तो भोला भण्डारी शिव-शंकर कह देते हैं।

शिव बाबा को भोलानाथ कह बहुत महिमा करते हैं। वह तो भोला-भण्डारी शिव-शंकर कह देते हैं। शंकर को भोला-नाथ समझ लेते हैं। वास्तव में भोलानाथ शंकर तो लगता नहीं। उनके लिए तो कह देते हैं आंख खोलने से विनाश कर देते। धतूरा खाते हैं आद2 उनको फिर भोलानाथ कैसे कहेंगे। महिमा तो एक की ही होती है ना। तुमको शिव के मंदिर में जाके समझाना चाहिए। वहां तो बहुत भक्त लोग आते हैं। तो शिव का जीवन चरित्र सुनाना है। कहते हैं भोला-भण्डारी शिव बाबा। अभी शिव और शंकर का भेद तो तुम ने बताया है। शिव आद की पूजा होती ही है शिव के मंदिर में। तो वहां जाकर समझाना चाहिए हम आप को शिव की जीवनकहानी बताते हैं। लिखना भी चाहिए हम परमपिता परमात्मा शिव की जीवनकहानी सुनावेंगे। जीवनकहानी सुन कर ही कोई का माथा चकरीत हो जावेगा। शिव की फिर जीवन कहानी कैसे सुनावेंगे। तो मनुष्य बन्दर पुंछ बात समझ बहुत आवेंगे। बोलो इस निमंत्रण पर जो आवेंगे उन्हों को हम निराकार परमपिता परमात्मा शिव की जीवन-कहानी बतावेंगे। गांधी आद भी की भी बायोग्राफी सुनते हैं ना। अभी तुम शिव की महिमा करते हैं शिव की तो मनुष्यों की बुधि से सर्वव्यापी की बातें उड़ जावेंगी। एक की महिमा फिर दूसरे से मिल न सकेगी। यह तो मन्दिर बनाते हैं वा प्रदर्शनी करते हैं वह कोई शिव का मंदिर तो है नहीं। तुम तो जानते हो सच्चा2 शिव का मंदिर यह है। जहां रचता खुद रचना के आदि, मध्य, अन्त का राज़ समझाते हैं। तुम लिख सकते हो रचता की जीवनकहानी और रचना के आदि मध्य अन्त का नालेज अथवा हिस्ट्री खुब सुनावेंगे। हिन्दी-अंग्रेजी लिखत हो। बड़े2 पास जावेंगे तो बन्दर खावेंगे। यह कौन हैं जो परमपिता परमात्मा की बायोग्रफी बताते हैं। सिर्फ रचना के लिए कहेंगे तो समझेंगे प्रलय हुई। फिर नई दुनिया रची। परन्तु नहीं। तुमको तो समझाना बाप पतितों को [illegible] बनाते हैं। सर्व पतितों को पावन बना रहे हैं। तो मनुष्य बन्दर खावे। शिव के मंदिर में तो बहुत आवेंगे। हॉल वा मण्डप बड़ा होना चाहिए। भल तुम प्रभात फेरी निकालते हो। इन में भी इन [illegible] को राज्य कौन देते हैं वह समझाना है। निराकार शिव बाबा जो सभी आत्माओं का परमपिता है बाप है उनकी हम जीवन कहानी बताते हैं। वही आकर राजयोग सिखलाते हैं। [illegible] 2 बैठ विचार सागरमंथन करना चाहिए। कैसे शिव के मंदिर में जाकर सर्विस करें। शिव के मंदिर में सवेरे जाकर पूजा आद करते हैं। घंटी आद भी सवेरे बजती होगी। शिव बाबा भी प्रभात के समय आते हैं ना। उससमय तो नहीं सुनाये सकेंगे। सभी मनुष्य सो [illegible] होंगे। रात को फिर भी मनुष्यों की फुर्सत रहती है। बत्तियां आद भी मिलती हैं। रोशनी भी अच्छी करनी चाहिए। शिव बाबा आकर आत्माओं को जगाते हैं ना। सच्ची2 दीपमाला तो यह है। हरेक के घर का दीपक जगता है। आत्माओं की ज्योत जगती है। वह तो घर में दीवा जलाते हैं। वह कोई दीपक नहीं है। दीपा-वली आ वास्तव में अर्थ ही यह है। कोई कोई का दीपक बिलकुल जगता ही नहीं है। तुम जानते हो हमारा दीपक कैसे जगता है। दीपमाला भी तुमको इससे सिध करनी है। सब का दीपक जग जाता है। कोई मरता है तो दीवा जलाते हैं कि अंधियारा है। परन्तु पहले तो आत्मा का दीपक जगे तब अंधियारा न हो। मनुष्य घोर अंधियारे में ही हैं। आत्मा तो एकसेकण्ड में एक शरीर छोड़ दूसरे में चली जाती है। अंधियारा की इसमें बात ही नहीं। यह भक्तिमार्ग की रसम है। घी घृत खलास होने दीवा बुझ जाती है। अंधियारा का भी अर्थ कुछ नहीं समझते हैं। आगे आत्माओं को बुलाते थे। कुछ पूछते थे। अभी इतना नहीं चलता है। यहां भी आते हैं। कोई2 समय कुछ थोड़ा बोल देते हैं। बोलो तुम सुखी हो? तो कहेंगे हां। सो तो जरूर यहां से जो जावेगा अच्छे घर में ही जन्मलेंगे। जन्म तो जरूर अज्ञानी के ही घर में लेंगे ना। ज्ञानी के घर में तो जन्म ले [illegible] सके। क्योंकि ज्ञानी ब्राह्मण तो विकार में जा न सके। वह तो पवित्र है ना। बाकी हां अच्छे सुखी घर में जन्म लेंगे। विवेक भी कहते हैं जैसी अवस्था वैसा जन्म। फिर वहां अपना सब जलवा दिखाते हैं। भल शरीर छोटा है इसलिए बोल न सके। थोड़ा भी बड़ा होने से ज्ञान का जलवा दिखावेंगे जरूर। जैसे कोई2 शास्त्रों के संस्कार

ले जाते हैं तो छोटे पन में ही फिर उस में लग जाते हैं। यहां से मीनालेज ले जाते हैं तो जरूरमहिमा निकालेंगे। अभी शिवजयन्ति तो है सोमवार को। वह तो है अज्ञानी मनुष्यों का मनाना करना। अभी तुम 32वीं शिव जयन्ति मनाते हो। वह लोग कुछ समझते नहीं हैं। पूछनप चाहिए अगर वह सर्वव्यापी है तो जयन्ति कैसे मनावेंगे। अभी तुम बच्चे पढ़ रहे हो। तुम जानते हो वह बाप भी है टीचर भी है सदगुरु भी है। बाबाने समझाया था सिख लोग भी हैं कहते हैं सतगुरु अकालड़ . अब वास्तव में अकाल मूर्त तो सभी आत्मायें हैं। परन्तु एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है इसलिए जन्म-मरण कहा जाता है। आत्मा तो वही है। आत्मा 84 जन्म लेती है। शिव बाबा का तो ऐसे नहीं होता है। उनकी शिवजयन्ति मनाते हैं तोपूछना चाहिए ना। अभी तो टू लेट है। मरली पहुंच न सकेगी। जयन्ति पर समझावेंगे तो जरूर कैसेऔर कब जन्म लेते हैं। कल्प जब पूराहोता है तो खुद ही आकर बताते हैं कि मैं कौन हूं। मैं ने कैसे इनमें प्रवेश किया है जिससे तुम आपे ही समझ जाते हो पहले नहीं समझते थे। हां परमात्मा की प्रवेशता हैबाकी कैसे, कब हुई कुछ भी समझते थोड़े ही थे। दिन प्रति दिन तुम्हारी समझ में आती रहती है। नई2 बातें सुनते रहते हैं। आगे थोड़े ही दो बाप का राज समझाते थे। आगे तो तुम जैसे कि बेवीयां थे। अभी भी बहुत बच्चे कहते हैं बाबा हम आप को दो दिन का बच्चा हूं। इतने दिन का बच्चा हूं। समझते हैं जो कुछ होता है कल्प पहले मिशन। इसमें बड़ी नालेजहै। समझने में टाईम लगता है। जन्म ले फिर मर भी पड़ते हैं। दो मास, आठ मास के बाद भी मर जाते हैं। बाप का बन कर फिर विकार में गिरते हैं तो मर जाते हैं। तुम्हारे पास आते हैं कहते भी हैं बरोबर राईट है। वह हमारा बाप है हम उनके सन्तान हैं। हां2 कहते हैं। बच्चे लिखते भी हैं बहुत प्रभावित हो जाते हैं। बाहर गया खुलासा। मर पड़ा। फिर आते नहीं। तो क्या होगा नैया तो पिछाड़ी में आकर खिवैया होंगे या तो फिरौजा में आ जावेंगे। यह सब बातें समझाने की हैं। हम शिव जयन्ति कैसे मनाते हैं, शिव बाबा कैसे सदगति करते हैं. शिव बाबा स्वर्ग [illegible] जाते [illegible] ही समझते हैं वह ज्ञान का सागर है.....

[illegible] है। खुद कहते हैं मैं तुमको राजयोग सिखाता हूं। विश्व का मालिक बनता हूं। बाप तो है ही हेविन का रचता तो [illegible] हेविन का ही मालिक बनावेंगे ना। हम उनको वायोग्राफी बताते हैं। कैसे स्वर्ग की स्थापना करते करते [illegible], कैसे राजयोग सिखाते हैं आकर समझो। जैसे बाप समझाते हैं वैसे बच्चे नहींसमझा सकते हैं। इसमें बहुत अच्छा [illegible]माने वाला चाहिए। शिव के मंदिर में बहुत अच्छा मनाते होंगे तो वहां बैठ समझाना चाहिए। ल0ना0 के मंदिर में शिव की जीवनकहानी बैठ सुनावेंगे तो किसको जंचेंगे नहीं। [illegible] ख्याल में नहीं आवेगा। फिर उन्हों को अच्छी रीत बुद्धि में बिठाना पड़े। ल0ना0 के मंदिर में भी बहुत आते हैं। उन्हों को ल0ना0 वा राधे-कृष्ण का समझाये सकते हैं। इनका अलग मंदिर तो होना नहीं चाहिए। कृष्णजयन्ति पर कृष्ण के मंदिर में जाकर समझावेंगे। हम उनकी 84 जन्मों की जीवनकहानी को सुनाते हैं। कृष्णही गोरा अथवा सांवरा करो गाया जाता। कहते भी हैं गांवरे का छोरा। गांवरे में तो गईयां और बकरियां ही चराते होंगे। बकरियों का तो दूध [illegible] पीया है। इस ने। तो बकरी चराई होगी। बाबा अगर सिन्ध में जावे तो वह जगह भी बता सकता हूं। [illegible] में हम रहते थे। उनका बच्चा अभी एम0पी0है। फोन फील करता हूं हम गांवरे का छोरा था। बरोबर [illegible] न जुती थी। दौड़ते-भागते रहते हैं थे। 10-11 आने मन अनाज बेचते थे। अभी स्मृति आई है। हम [illegible] फिर बच्चे आ बाप ने आकर प्रवेश किया है।

तो यह बाप का लक्ष्य सब को मिले तो शिव बाबा को याद करे। वही सर्व का सदगति दाता [illegible]। तुम रामचन्द्र की भी जीवनकहानी बता सकते हो। कब इनका राज्य शुरु हुआ। कितनावर्ष हुआ। ऐसी2 [illegible]लात आनी चाहिए। शिव के मंदिर में शिव की वायोग्राफी सुनानीपड़े। राम के मंदिर में राम की महिमा करनी है। कैसे राम राज्य पाया। कब पाया। तुम अभी पुरुषार्थ कर रहे हो देवी-देवता पद पाने। देवी-देवता धर्म की पूजा करते हो। आदीसनातनदेवी देवता धर्म हमारा है। हिन्दु अक्षर न कहा तो भी कोई गुसा नहीं करेंगे।

बोलो हम पुजारी हो देवताओं के थे। तो इसी धर्म के ठहरे ना। जरूर ही भूल गये हैं कि हमारा आदीसनातन देवी-देवता धर्म है। तुम किसको भी कह सकते हो हम आदीसनातन देवी-देवता धर्म के हैं। और पवित्र हैं। कोई भी कुछ कह न सके। हिन्दु धर्म कोई ने तो स्थापन नहीं किया है ना। बाकी हिन्दु कोई धर्म है नहीं ऐसा सिया कहने से बिगर पड़ते हैं। समझते हैं यह को ईसाई आद है। बोलो हम आदीसनातन देवी-देवता धर्म के हैं। जिसको आजकल हिन्दु कह दिया है। हम पूजते देवताओं को हैं, महिमा भी देवताओं की करते हैं। शिव ने ही आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना की है। तो उनकी महिमा क्यों नहीं करेंगे। ऐसी बातें दिल में धारण करतेरहो। मंदिर में जाये तुम समझाये सकते हो। हम देवताओं की महिमा करते हैं। हम सभी जीवन-कहानी बता सकते हैं। राम की भी बता सकते हैं। देहधारी तो पुनर्जन्म जरूर लेते हैं। बाप का पूरा परिचय देना तो फिर सर्वव्यापी का ज्ञान बुधि से निकल जाये। नाम रूप से न्यारी तो कोई चीज़ ही होती नहीं। आकाश इतना सूक्ष्म तभी भी उसका नाम है। आत्मा इतनी छोटी बिन्दी है उसका भी तो नाम कहा जाता है ना। आत्मा इस शरीर के आधार से ही पार्ट बजाती है। यह एक ही शिव बाबा है जो पुनर्जन्म नहीं आते हैं। बाकी देह-धारी तोपुनर्जन्म में आते हैं2 ऐसे2 बैठ शिव जीवन कहानी बतानी चाहिए। फिर श्रीकृष्ण की जीवनकहानी। बाकी शास्त्रों में तो बहुत वन्तकथायें हैं। जो सुनते सुनाते पढ़ते ही आते हैं। मुक्ति-जीवनमुक्ति की कोई भी ठौर पा न सके। तुम्हारी बुधि में यहसारी नालेज है सीढ़ी चढ़ते हैं फिर उतरते हैं। कोई तो अपने पुरुषार्थ से समझ सकते हैं। हम पीछे आयेंगे। या तो पढ़े हुये आगे भरी दौड़ेंगे। स्थूल सेवा भी बहुत की होगी तो पहले आवेंगे। बहुत ही प्यार से यज्ञ की हड्डीसर्विस करते हैं तो फल भी अच्छा मिलेगा। धनचकर मारने वाले को उच्च पद मिल न सके। कोई2 नौकर भी धणी को बड़ा तंग करते हैं। कोई तो ऐसासुख देते हैं जो बच्चा भी दे न सके। यह भी बच्चे जानते हैं दिन प्रति दिनगुह्य2 पाइन्ट सामलता रहता है। जो बहुत [illegible] इसलिए वह नोट भी करनी चाहिए। मुरली में भी तन्त अच्छी2 पाईन्ट निकलेगी तो उस पर ध्यान जास्ती जायेगा। बाबा को तो पुरानी पाईन्ट्स मिक्स कर सुनानी पड़ती है। क्योंकि कव नये भी आ जाते हैं। नई2 अच्छी पाईन्ट नोट करनी चाहिए। पाईन्ट्स ऐसे2 हैं जो कोई एकपाईन्ट से भी किसका दिमाग खुल जाये। पढ़ाई का भी हुनर होता है ना। तुम सब टीचर्स हो। यह भी समझाते फिर भी बाप का फरमान है मामेकं याद करो। स्वदर्शन-चक्र तो फिराते रहना है। यह चक्र फिराना ही मनमनाभव है। स्वदर्शन-चक्र फिराते हो तब ही तुम्हारे विकर्म विनाश हो हैं। श्रीकृष्ण ने भी अगले जन्म में यह स्वदर्शनचक्र फिराया है तब ही यह पद पाया है। बाकी चक्र से कोई मारने आद की बात नहीं। तो सारा दिन तुम्हारी बुधि यही चलता रहे। तुम्हारा जाने का घर तो वह है ना। मुसाफिरी पूरी कर फिर वहां जाकर विश्राम पाते हो। वह है विश्राम पुरी शान्ति धाम। विश्राम पुरी घर को कहा जाता है। नींद भी मनुष्य घर में करते हैं ना। तुम वहां नींद अच्छी रोत करते हो। शरीर ही नहीं। रात को भी आत्मा शरीर से न्यारी हो जाती है। इसको ही नींद कहा जाता है। तुम बच्चों को अभी [illegible] बनना है। प्रेक्टीस करते2 अशरीरी बन जायेंगे। जैसे भक्ति मार्ग में भक्ति करते2 एकदम लीन हो जाते [illegible] नको ही देखते रहते हैं। इस में यहसारी दुनिया भूल जानी है। यह है बेहद का सन्यास। हमको तो अपने घर जाना है। यह कुछ भी रहेगा नहीं। यहां से नफरत हो जाती है। शाहूकारों को तो बड़ा लय रहता पैसे में। वही याद रहता है। [illegible]न्य जितना का उतना अच्छा। बाप और भाई-बहिन। कितना छोटा सम्बन्ध है। जब रचनारचते हैं तो बच्चे हैं। बच्चे हैं। फिर प्रजापिता ब्रह्मा के मुखवंशावली द्वारा ब्राह्मण रचते हैं तो भाई-बहिन। क्रिमनल आई हो न सके। दृष्टि न जाये इसके लिए युक्ति समझाई है। भाई समझने से फिर कोई भी विकर्म नहीं होगा। भाई-बहिन का भी सम्बन्ध निकल जाये। भाई-भाई का ही सम्बन्ध रहे। वह अवस्था चाहिए बच्चों की। अच्छा मीठे2 लाडले बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। बच्चों को नमस्ते।